Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 1420–1426

STUDY OF THE IMPACT OF EMOTIONAL INTELLIGENCE OF TEACHERS WORKING IN HIGHER SECONDARY SCHOOLS ON THEIR ADJUSTMENT CAPACITY AND OCCUPATIONAL STRESS

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी समायोजन क्षमता एवं व्यवसायिक तनाव पर प्रभाव का अध्ययन

Santosh Sharma [1], Sangeeta Sharaf [2]

[1] Researcher, MATS School of Education, MATS University, Gullu, Arang, (CG)
[2] Professor, Research Director, MATS School of Education, MATS University, Gullu, Arang, (CG)

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.4425

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: With the increase in population, there has been an explosion of numbers in education. Now lifelong education is talked about and planning is not limited to any particular period of age. Now questions of significance and context are raised. Under equality of educational opportunities, the removal of regional imbalance, cultural differences and social discrimination is talked about prominently in educational planning. Thus we are seeing that the field of educational planning is becoming very wide nowadays. Swami Vivekananda has accepted the importance of education in the field of education. While visiting many cities of Europe, he has also seen the material achievements of education. He has considered illiteracy as one of the reasons for India's poverty.

Swami ji was unhappy with the education system of that time. He thought that the education of that time does not inculcate any qualities in man. That education is not at all a human-making education. Swami ji has called that education as negative education. Negative education cripples man. It frustrates his originality and does not develop the qualities of humanity in him.

The proposed research problem which is "Study of the impact of emotional intelligence of teachers working in higher secondary schools on their adjustment capacity and occupational stress", has a deep need and importance of research in it. How do teachers working in higher secondary schools adjust themselves using their emotional intelligence and how do they control their emotions in the most difficult situations through their emotional intelligence and find a solution to the problem.

Hindi: जनसंख्या वृद्धि के साथ शिक्षा में संख्याओं का विस्फोट हुआ है। अब जीवन पर्यन्त शिक्षा की बात की जाती है न की आयु के किसी विशेष काल तक ही योजना सीमित रहती है। अब सार्थकता एवं संन्दर्भ के प्रश्न खड़े किये जाते है। शैक्षिक अवसरों की समानता के अन्तर्गत क्षेत्रीय असंतुलन सांस्कृतिक भिन्नता सामाजिक भेदभाव को दूर करने की बात शैक्षिक योजना में प्रमुखता से की जाती है। इस प्रकार हम देख रहे है की शैक्षिक नियोजन का क्षेत्र आजकल बहुत विस्तृत होता जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है। युरोप के अनेक नगरों का भ्रमण करते हुए उन्हें शिक्षा की भौतिक उपलब्धियां भी दिखाई पड़ी है। भारत की निर्धनता का एक कारण उन्होनें अशिक्षा को माना है।

स्वामी जी तत्कालीन शिक्षा प्रणाली से दुखी थे। उनका विचार था की उस समय की शिक्षा मनुष्य में कोई गुण उत्पन्न नहीं करती । वह मनुष्य बनाने वाली शिक्षा है ही नहीं। उस शिक्षा को स्वामी जी ने निषेधात्मक शिक्षा कहा है। अभावात्मक शिक्षा मनुष्य को पंगु बना देती है। उसकी मोलिकता को कुंठित कर देती है और उसमें मनुध्यत्व के गुणों का विकास नहीं करती।

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन क्षमता एवं व्यवसायिक तनाव पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' इसमें शोध की आवश्यकता एवं

महत्व गहन रूप से है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अपनी संवेगात्मक बुद्धि का उपयोग करके किस प्रकार अपने आप को समायोजित करते हैं व अपनी संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपने संवेग को नियंत्रित करते हैं और समस्या का हल ढूंढ़ लेते हैं।

Keywords: Higher Secondary School, Emotional Intelligence, Adjustment Capacity, Occupational Stress, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता, व्यवसायिक तनाव

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति समाज और राष्ट्र की प्रगति के साथ साथ सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक है। सुभाषित रत्न दोष में कहा गया है कि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो कि व्यक्तिगत कुशलता है जो भिन्न भिन्न व्यक्तियों में व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है। इस प्रकार संवेगात्मक सावेगिक उसकी दृष्टि है। यह सभी तत्वों की जड़ को जानने मे मदद करता है और यह काम करने की विधी बताता है। इसी क्रम में शिक्षा वह महत्वपूर्ण बिन्दु होता है जो विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य तक पहुंचने में उनकी मदद करता है। किन्तु ज्ञान प्रदान करने के इस क्रम में कभी कभी शिक्षक भी हताश और निराश होता है। इस कारण शिक्षक की कार्यक्षमता पर प्रभाव पडता है एवं उसे समायोजन में कठिनाई होती है। इसमें एक कडबुद्धि है जो संवेग का अभिज्ञान तथा संवेगो को व्यवस्थित करती है। यबुद्धि एक आंतरिक योग्यता होती है। जिसके द्वारा व्यक्ति में संवेगों को महसूस करने समझने एवं उनका प्रभावपूर्ण नियंत्रण करने की क्षमता का विकास होता है।

इस क्रम मे व्यवसायिक तनाव भी व्यक्ति के प्रत्यक्ष योग्यता से अधिक कार्य करने की मांग करता है। जब व्यक्ति कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए तैयार न हो तब दबाव होता है अध्यापक के इस दबाव को नकारात्मक संवेग जैसे कोध, चिंता, तनाव, न्यूनता, निराशा आदि के अनुभव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

2. संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता होती है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता हैं। संवेगों का उचित प्रकटीकरण करता है तथा दूसरों के संवेगो समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार करता है। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की अपनी भावनाओं तथा दूसरों की भावनाओं की पहचान कर सकने की क्षमता से है जिसकी सहायता से वह अपने को अभिपे्ररित कर सके और अपने अन्दर पाए जाने वाले संवेगों एवं उनके आधार पर बने सम्बन्धो को ठीक से व्यवस्थित कर सके।

सामान्यतया व्यक्ति की सफलता के पीछे उसकी बुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। मनोवैज्ञानिकों ने अब तक बुद्धि के ज्ञानात्मक पक्ष पर ही अधिक ध्यान दिया इसका मापन करने के लिए बुद्धिलब्धि (प्फ) का प्रयोग किया गया। परन्तु वर्तमान में नवीन शोधों के परिणामों द्वारा मनोवैज्ञानिक इस बात पर सहमत हुए है कि वास्तिविक जीवन में व्यक्ति की सफलता की भविष्यवाणी के लिए बुद्धि के केवल ज्ञानात्मक पक्ष को ही आधार नहीं बनाया जा सकता क्योंकी व्यक्ति के जीवन में ऐसे कई उदारण मिलते है जो इंगित करते है कि अधिक बुद्धिलब्धि वाले व्यक्ति भी अपने जीवन में कुछ उपब्लिधियां पाने में असफल हो जाते है और कम बुद्धिलब्धि वाले व्यक्ति कई कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न कर लेते है। वर्तमान समय में नवीन शोंधो द्वारा मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति की सफलता की भविष्यवाणी करने के लिए जिस आधारभूत तथ्य को प्रकट किया वह है संवेगात्मक बुद्धि।

3. समायोजन

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जिवित व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है। समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते है। व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियां आती रहती है जिनका उसे समय समय पर सामना करना पडता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग अलग क्षमता के अनुसार समायोजन करने का प्रयत्न करते हैं कुछ व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में सफल होते हैं तो कुछ व्यक्ति हार मानकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति तनाव का शिकार बने रहते है। ये बातें शारिरिक और मानसिक स्वास्थ को प्रभावित करती है।

एक छात्र अद्र्ववार्षिक परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपना लक्ष्य बनाता है, पर दूसरे छात्रों की प्रतियोगिता और अपनी कम योग्यता के कारण वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होता है। इससे वह निराशा और मानसिक तनाव का अनुभव करता है। ऐसी स्थि में वह अपने मौलिक लक्ष्य को त्यागकर अर्थात अद्र्ववार्षिक परीक्षा में अपनी असफलता के प्रति ध्यान न देकर वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान बनाना अपना लक्ष्य रखता है। अब यदि वह अपने इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो वह अपनी परिस्थिति एवं वातावरण से समायोजन कर लेता है पर यदि उसे सफलता नहीं मिलती तो उसमें असमायोजन उत्पन हो जाता है लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। यह समायोजन व्यक्ति अपनी क्षमता, योग्यता के अनुसार करता है।

4. व्यवसायिक तनाव

व्यवसायिक तनाव एक सम्बन्धित बहुयामी परिणाम है जो कि तब उत्पन्न होता है जब परिस्थिति की मांग व्यक्ति की क्षमता से अधिक होती है और ऐसे में वे प्रतिक्रिया करतें हे। इस प्रकिया में उनकी शारीरिक संज्ञानात्मक व व्यवहारिक कार्यप्रणाली सम्मिलित होती है। या हम यह भी कह सकते है कि कीसी की नौकरी से संबंधित मनोवैज्ञानिक तनाव है। कार्यस्थल पर तनावपूर्ण स्थितियां क्या है, यह समझकर और उन स्थितियों को दूर करने के लिए कदम उठाकर व्यावसायिक तनाव को प्रबंधित किया जा सकता है। व्यावसायिक तनाव तब हो सकता है जब श्रमिकों को पर्यवेक्षकों या सहकर्मियों द्वारा समर्थन महसूस नहीं होता है उन्हे यह महसूस होता है कि उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य पर उनका बहुत कम नियंत्रण है। व्यवसायिक तनाव व्यापारियों, कर्मचारियों, और नियोक्ताओं इन सभी के लिए चिंता का विषय है। क्योंकी तनाव पूर्ण नौकरी के वातावरण में कर्मचारियों के शारिरिक स्वास्थ एवं उनकी भावनाओं पर गहरा असर करता है।

विश्व स्वास्थ संगठन और अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन ने एक अध्ययन किया। परिणामों से पता चला की लम्बे समय तक काम करने से मनो-सामाजिक व्यावसायिक तनाव बढता है। आधिकारिक अनुमानों के अनुसार व्यवसायिक जोखिम इसका सबसे बढा जिम्मेदार है जिसके कारण 2016 में हृदय रोग और स्टोक की घटनाओं से अनुमानित 745,000 श्रमिकों की मुत्यु हो गई।

1) व्यावसायिक तनाव तीन प्रकार के तनाव को जन्म दे सकता है।
2) व्यवहारिक (आपका सामान्य व्यवहार)
3) शारीरिक (सिरदर्द)
4) मनोवैज्ञानिक (उदासी,चिन्ता,तनाव,)

अर्थात नौकरी का तनाव कई प्रकार की स्थितियों से जुडा हुआ है जिसके कारण व्यक्ति में अवसाद के लक्षण आना, मानसिक विकार उत्पन्न होना, असंतोष की भावना इत्यादि। यदि तनाव अधिक मात्रा में हो तो व्यक्ति नशे की लत का भी शिकार हो जाता है। इससे व्यक्ति की कार्यक्षमता घटती है और वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है।

5. संबंधित शोध अध्ययन-

1) **गोलमैन (1998)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर भावात्मक बुद्धि तथा नेतृत्व व्यवहार पर उनका पहला लेख आया, जिसकी प्रतिक्रिया उत्साहजनक थी। पहली प्रतिक्रिया थी वास्तविक रूप में नेतृत्व तथा अनुयायियों की अन्तःक्रिया केवल दो स्वतंत्र मस्तिष्कों की चेतना एवं अचेतना की अवस्था में प्रतिक्रिया नहीं अपितु व्यक्तिगत मस्तिष्क एकल प्रणाली में संम्मिलित हो जाते हैं। तथा दुसरी प्रतिक्रिया प्रभावशाली-नेतृत्तव का विचार मस्तिष्क में एक प्रभावशाली सामाजिक क्षेत्र रखता है इस विचार ने प्ररित किया कि संवेगात्मक बुद्धि के विचारों को आगे बढाया गया जिसके आधार पर यह पाया गया कि नेतृत्तव प्रभाविता का निर्माण संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर होता है तथा इसका अनुमान लगाया जा सकता है।
2) **तिवारी, (1978)** ने किशोर छात्र छात्राओं के संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें पाया कि व्यवसायिक कॉलेज के छात्रों की अपेक्षा अव्यवसायिक कॉलेज के छात्रों में घरेलू समायोजन के क्षेत्र में अधिक समस्या पायी गयी। इंजीनियरिंग छात्रों की अपेक्षा आर्ट्स के छात्रों में घरेलू तथा स्वास्थ संबंधी समस्या अधिक पायी गयी। मेडिकल छात्रों की अपेक्षा विज्ञान के छात्रों में पारिवारिक समायोजन कम पाया गया। मेडिकल छात्रों में सामाजिक, संवेगात्मक एवं शिक्षण के क्षेत्र में अधिक समस्या पायी गयी।
3) **शर्मा सोनी (2001)**''अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''। प्रस्तुत शोधकत्र्ता में सरकारी व निजी क्षेत्र के शिक्षकों के व्यक्तित्व व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसके निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

- पुरुष अध्यापकों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावी तथा समायोजन क्षमता उच्च स्तर की पाई गई।
- महिला अध्यापिकाओं का व्यक्तित्व भी सरकारी विद्यालयों में औसत स्तर का पाया गया तथा समायोजन क्षमता निजी क्षेत्र की अध्यापिकाओं की अधिक पाई गई।

4) **शर्मा एस.एन. (2002)**''अभिभावकों की सहभागिता, अन्र्तसंबंध तथा प्रेरणाओं का अध्ययन''।जिन विद्यार्थियों के माता-पिता अपने बच्चों के साथ पूरी तरह से उनकी गतिविधियों में सहभागिता करते हैं उनको लगातार प्रेरणा देते रहते हैं उनके अपने बच्चों साथ बहुत अच्छे संबंध होते हैं तथा उन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। इसके फलस्वरूप उनका समायोजन भी उत्तम बना रहता है।
5) **कॉटन एवम हार्ट, (2003)** व्यवसायिक तनाव को उस स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है जहंा व्यवसाय से संबंधित कारक कर्मचारियों के साथ इस तरह से बातचीत करते हैं जहंा व्यवसाय से संबंधित कारक कर्मचारियों के साथ इस तरह से बातचीत करते हैं जो उनकी शारीरिक स्थितियों को बाधित करता है जिससे वे सामान्य काम काज से विचलित हो जाते हैं।
6) **फ्लिपो (1984)** ने बताया की हाल के दिनों में मानव शरीर पर तनाव के प्रभाव पर काफी ध्यान दिया गया है। हालंाकि तनाव कार्यात्मक और निष्क्रिय हो सकता है लोगों के प्रदर्शन पर तनाव के परिणाम एवं प्रभाव ने उनके लिए कुछ उपशामक हस्तक्षेप तनाव प्रबंधन रणनीतियों को अपनाए बिना अपने लक्ष्यों को बेहतर ढंग से प्राप्त करना अति आवश्यक बना दिया है।

6. उदेश्य

हम किसी भी कार्य को कोई्र ना कोई उदेश्य लेकर ही पूर्ण करते है। बिना उदेश्य के कोई भी कार्य अर्थहीन होता है। इसी तरह शोधकर्ता के लिए शोध कार्य पूर्ण करने हेतु अध्ययन का उदेश्य जानना आवश्यक होता है।

1) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्वि तथा समायोजन क्षमता का सहसंबंधात्मक आंकलन करना।
2) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुध्द्वि तथा व्यवसायिक तनाव का सहसंबंधात्मक आंकलन करना।

7. परिकल्पना

अनुसंधान में परिकल्पना की रचना अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। परिकल्पना की सहायता से अनुसंधानकर्ता को तर्कसंगत आकंड़ो के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। परिकल्पना एक संभावित समस्यीकरण होता है जिसकी वैधता की जांच की जाती है। इसकी प्राथमिक अवस्था एक काल्पनिक समाधान के रूप में होती है।

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुध्द्वि तथा समायोजन क्षमता सार्थक रूप से सहसंबंधित नहीं होंगे।

H_{02} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुध्द्वि तथा व्यवसायिक तनाव सार्थक रूप से सहसंबंधित नहीं होंगे।

विधि

प्रस्तुत शोध की समस्या को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि को शोध विधि के रूप मे प्रयुक्त किया जाएगा। क्योंकी इसके प्रतिदर्श पूरे समष्टि में बिखरे हुए है।

न्यादर्श

न्यादर्श रिसर्च कार्य की आधार शिला है। यह आधार शिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वनीयता एवं परिशुद्वता पूर्ण होगें।

प्रस्तुत शोध में गरियाबन्द जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कार्यरत कुल 500 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि के माध्यम से न्यादर्श हेतू चयन किया जाएगा।

उपकरण

उपरोक्त दिए गए समस्या के समाधान हेतु निम्न शोध उपकरण का प्रयोग करेंगे।

क्र.	उपकरण	मापनी
1	संवेगात्मक बुध्द्वी मापनी	डॉ. शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित
2	समायोजन क्षमता मापनी	ए.के.पी.सिंन्हा और आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित
3	व्यवसायिक तनाव मापनी	एस.शर्मा एवं एस कौर द्वारा निर्मित

8. संख्यकीय अभिप्रयोग

अध्ययन के लिये बनायी गयी परिकल्पना भ्01 के अनुसार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन क्षमता सार्थक रूप से सहसंबंधित नहीं होगी। इस परिकल्पना का सत्यापन करने के लिये सहसंबंध गुणांक निकाला गया जिसकी गणना पियरसन के सूत्र से की गयी । आंकड़ों को अधिक विश्लेषित करने हेतु निर्धारण गुणांक की गणना संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन क्षमता के बीच एक्सेल में प्रकीर्ण आरेख तथा ट्रेंडरेखा से की गयी है । इनके परिणाम तालिका में दिये गये हैं ।

तालिका

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्य कर रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध गुणांक की गणना

चर	N	'r'
संवेगात्मक बुद्धि	500	0.566**
समायोजन क्षमता	500	

r(df=498) at .08 level 0.07 and 0.11 at .01 level

पियर्सन सहसंबंध गुणांक 0.566 जैसा कि तालिका में दिया है, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्य कर रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता के बीच एक उल्लेखनीय और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सहसंबंध बताता है । यह सहसंबंध गुणांक बताता है कि जैसे-जैसे संवेगात्मक बुद्धि पर स्कोर बढ़ता/घटता है, शिक्षकों की समायोजन क्षमता पर एक समान सार्थक प्रभाव पड़ता है जिसकी विश्वसनीयता 0.01 के स्तर पर सांख्यिकी रूप से सिद्ध होती है ।

आरेख

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्य कर रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के बीच निर्धारण गुणांक का आंकलन

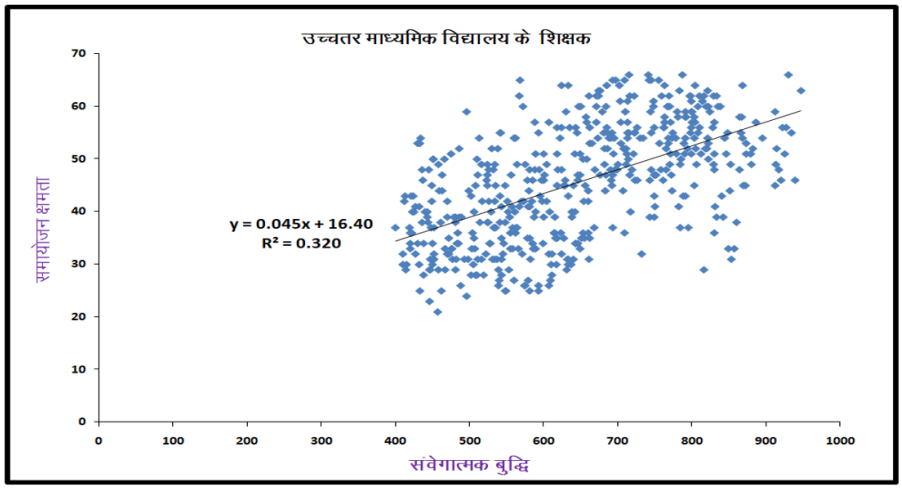

आरेख से निकाले गये निर्धारण गुणांक (R^2) का मान 0.320 है जो दर्शाता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समायोजन क्षमता में लगभग 32% परिवर्तनशीलता को उनकी संवेगात्मक बुद्धि में परिवर्तन से समझाया जा सकता है।

अतः संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की समायोजन क्षमता में भी वृद्धि होती है । इस परिणाम कें परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन क्षमता सार्थक रूप से सहसंबंधित नहीं होगी, अमान्य की जाती है ।

तालिका

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्य कर रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यवसायिक तनाव के बीच सहसंबंध गुणांक की गणना

चर	शिक्षकों की संख्या	'r'
संवेगात्मक बुद्धि	500	- 0.588**
व्यवसायिक तनाव	500	

r(df=498) at .08 level 0.07 and 0.11 at .01 level

-0.588 का पियर्सन सहसंबंध गुणांक जैसा कि तालिका में दिया है, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्य कर रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और व्यवसायिक तनाव के बीच एक उल्लेखनीय और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण ऋणात्मक सहसंबंध बताता है । यह सहसंबंध गुणांक बताता है कि जैसे-जैसे संवेगात्मक बुद्धि पर स्कोर बढ़ता है, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्य कर रहे शिक्षकों में व्यवसायिक तनाव भी कम होता है जिसकी विश्वसनीयता 0.01 के स्तर पर सांख्यिकी रूप से सिद्ध होती है ।

आरेख

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्य कर रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यवसायिक तनाव के बीच निर्धारण गुणांक का आंकलन

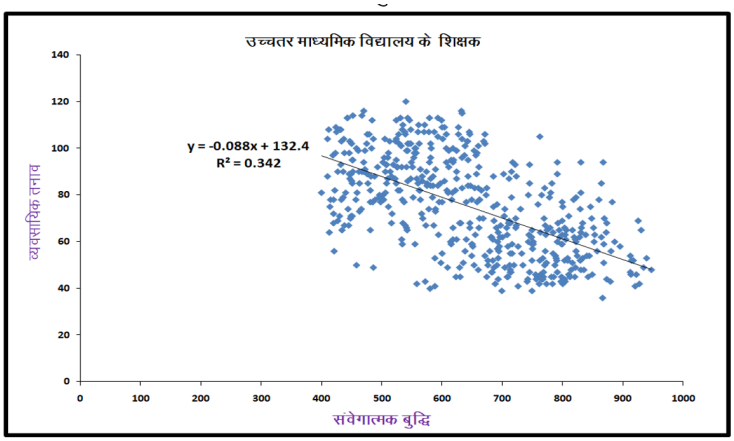

आरेख से निकाले गये निर्धारण गुणांक (R^2) का मान 0.342 है जो दर्शाता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसायिक तनाव में लगभग 34.2% परिवर्तनशीलता को उनकी संवेगात्मक बुद्धि में परिवर्तन से समझाया जा सकता है ।

अत: संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में व्यवसायिक तनाव भी कम होता है । इस परिणाम कें परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना H_{02} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा व्यवसायिक तनाव सार्थक रूप से सहसंबंधित नहीं होंगे, अमान्य की जाती है ।

9. निष्कर्ष

1) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनमें विद्यमान समायोजन क्षमता को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाती है ।
2) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनमें विद्यमान व्यवसायिक तनाव को कम करने में मुख्य भूमिका निभाती है ।
3) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष तथा महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनकी समायोजन क्षमता को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाती है ।
4) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष तथा महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि उनमें विद्यमान व्यवसायिक तनाव को कम करने में मुख्य भूमिका निभाती है ।

निष्कर्षत: परिणाम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिये संवेगात्मक बुद्धि के महत्व को रेखांकित करते हैं क्योंकि उच्चतर माध्यमिक शाला के गतिशील एवं चुनौतीपूर्ण वातावरण में अनुकूलन करने तथा निरंतर अपने शिक्षण कौशल को विकसित करने तथा विद्यमान समायोजन क्षमता एवं व्यवसायिक तनाव को कम करने में संवेगात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

सुझाव

1) शैक्षणिक संस्थानों तथा नीति निर्माताओं को उच्चतर माध्यमिक शालाओं में कार्य रहे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के विकास के लिये विभिन्न कार्यक्रम तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे कि उनमें न केवल बेहतर समायोजन क्षमता का विकास हो सके वरन् प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले व्यवसायिक तनाव का भी उचित प्रबंधन हो सके ।

2) चूंकि शिक्षक छात्रों के सीखने के अनुभवों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए टीचर-ट्रेनिंग कार्यक्रम में उनकी संवेगात्मक बुद्धि के विकास को प्राथमिकता देने से अधिक लचीला और अनुकूल शिक्षण कार्यबल का निर्माण हो सकता है जिससे अंतत: शिक्षक एवं शैक्षिक समुदाय को अधिकाधिक लाभ मिल सके ।

संन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

कपिल डां एच के 2007 अनुसंधान विधिया भार्गव बुक हाउस आगरा।
पाठक पी डी 1982-83 शिक्षा मनोविज्ञान 13 संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर आगरा मेरठ प्रकाशन
पचैरी डां गिरीश उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक प्रथम संस्करण 2009 इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ.
भटनागर सुरेश 2007 शिक्षा मनोविज्ञान मेरठ प्रकाशन
मंगल एस. के. 2010 शिक्षा मनोविज्ञान अशोक के घोष प्रेंटिस हाल ऑफ़ इंडिया प्रायवेट लिमिटेड न्यू दिल्ली.
शर्मा डॉ. आर. ए. 2011 शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया आर. लाल बुक डिपो मेरठ
सक्सेना एन. आर. स्वरूप् 2011 शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वांत आर. लाल बुक डिपो मेरठ
पाण्डेय डॉ. राम शक्ल 1996 शिक्षा का अर्थ, शिक्षा का उदेश्य विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2
प्राथमिक शिक्षा 2003 मार्च
रिसर्च डाइजेस्ट, बाह्यूम -2, अक्टूबर-दिसम्बर 2008
राय पारसनाथ 1999 अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
रिसर्च डाइजेस्ट, अपैल-जून 2008 वाहयूम-1 इशू-4
शर्मा आर. 2009 परिकल्पनाओं का प्रतिपादन, शिक्षा अनुसंधान मेरठ आर.लाल बुक डिपो
शर्मा आर. 2009 अनुसंधान परिचय लाल बुक डिपो
श्रीवास्तव डी.एन. चर एवं उनका नियंत्रण मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2
श्रीवास्तव डी.एन सांख्यिकीय गणना मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2